सविता सिंह

सच अभी ऐसा दिख रहा था

सच अभी एक पत्ते जैसा दिख रहा था
सहस्र शिराओं लाखों रंध्रों वाला
ओस की बूँदें जिस पर पड़ी थीं
एक लाल कीड़ा जिस पर अपनी यात्रा
शुरू कर चुका था

नींद थी और रात थी
दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2005:143